डॉ.पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 29 MAY 1999

(डॉ.पांडुरंग पाटील)
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

डॉ.आर.जी.देसाई
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्रीमती मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय,
सांगली.

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री.मिलिंद नामदेव साळवे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध ``नौवें दशक के `सारिका'कहानी विशेषांकों ' में चित्रित नारी जीवन।`` (देह-व्यापार, नारी यातना, जन्तशुदा कहानी विशेषांकों के विशेष संदर्भ में) मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजना नुसार संपन्न हुआ है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है। श्री मिलिंद साळवे के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

शोध-निर्देशक

(डॉ.आर.जी.देसाई)

स्थान : सांगली

तिथि : 29/05/99

प्रख्यापन

यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. के लघु शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

शोध-छात्र

(मिलिंद नामदेव साळवे)

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 29/05/99

प्राक्कथन

विषय-चयन का उद्देश :-

मैंने अपनी एम्.ए . तक की शिक्षा `कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, पंढरपुर` महाविद्यालय से पूरी की है। पंढरपुर में मेरा निवास स्थान वेश्याओं की बस्ती के करीब था अत: उनका जीवन मैं बहुत ही करीब से देख चुका हूँ। उनका रहन-सहन, बोलचाल, उनकी समस्याएँ आदि से प्रभावित होने के कारण मैं चाहता था कि इन्हीं वेश्याओं को विषय बनाकर एम् . फिल का लघु शोध-प्रबंध लिखूं। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु मैंने वेश्या जीव्न पर लिखे कई उपन्यास तथा कहानियाँ पढ़ी हैं। परंतु उनमें वर्तमान वेश्याओं का यथासंभव चित्रण मुझे प्राप्त नहीं हुआ है। अत: मैंने पत्रिकाएँ पढ़नी आरंभ की। `सारिका` पत्रिकाओं को पढ़ते समय मुझे `देह-व्यापार कथा विशेषांक` शीर्षक से प्रकाशित वेश्या जीवन पर लिखी कहानियों के पांच अंक प्राप्त हुए। इन्हीं अंकों को लेकर मैंने `सारिका` पत्रिका में चित्रित वेश्या नारी के जीवन संबंधी विविध पहलुओं का अध्ययन करने की इच्छा विभागाध्यक्ष एवं मार्गदर्शक के सामने रखी परंतु मूल सामग्री कम होने के कारण मुझे `देह-व्यापार-कथा विशेषांकों` के साथ -साथ `नारी यातना कथा विशेषांक,' व `जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक` को लेकर "नौवें दशक के 'सारिका'कहानी विशेषांकों` में चित्रित नारी जीवन।" शीर्षक के अंतर्गत एम् . फिल शोध-कार्य पूरा करने की अनुमति मिली। मैं तो केवल वेश्या जीवन तक ही सीमित रहना चाहता था परंतु प्रस्तुत विषय के कारण नारी जीवन के समस्त पहलुओं को उजागर करने एवं अनुशीलन करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ इसीलिए मुझे खुशी हो रही है। मैं संतुष्ट हूँ कि मुझे प्रस्तुत विषय पर कार्य करने में मेरे मार्गदर्शक डॉ. र. ग. देसाई जी ने हर तरह से मदद एवं प्रेरणा दी है।

कहानी विधा ही क्यों ?

कहानी साहित्य लोकप्रिय साहित्य है और संख्याबहुल भी। इसीलिए साहित्यिक दृष्टि से कहानी विधा का अपना महत्त्व है। कहानी साहित्य में नारी जीवन के बारे में प्रारंभ से ही लिखा जा रहा है। काल के अनुरूप लेखन और अभिव्यक्ति में परिवर्तन आते रहते हैं। वर्तमान काल के संदर्भ में इस परिवर्तन को कहानी विधा ने समाज के सभी वर्गों और पहलुओं को जानने, परखने का सफल प्रयास किया है। इसीलिए मैंने लघु शोध-प्रबंध हेतु कहानी विधा का ही चुनाव किया है।

पत्रिका ही क्यों ?

कहानी के लेखन और प्रकाशन काल में अंतर आ सकता है। पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियाँ युगीन समस्या की तत्कालीन प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करती हैं, जो सार्थक और वर्तमान से जुड़ी होती हैं। अत: हमने लघु शोध-प्रबंध के लिए पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन करने की कोशिश की है।

`सारिका` ही क्यों ?

`सारिका` हिंदी की एक लोकप्रिय और स्तरीय पत्रिका है। पिछले कई सालों से कहानी को लेकर `सारिका` ने जो स्थान बनाया था विशेषत: नई कहानी के बदलते रूप और उसके विभिन्न प्रयोग जो `सारिका` ने किए हैं उससे `सारिका` का अपना एक अलग पाठक वर्ग बन गया था। `सारिका` ने अपने पाठक की रूचि विकसित एवं स्तरीय बनाने की कोशिश की है। इसीलिए हमने अध्ययन-विषय के रूप में `सारिका` को ही चुना है।

``नौवें दशक के `सारिका कहानी विशेषांकों में चित्रित नारी जीवन।`` इस विषय पर शोध-कार्य करने से पहले मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न उपस्थित हुए थे -

1. प्राचीन काल और वर्तमान काल में नारी की स्थिति में क्या अंतर है ?
2. पति-पत्नी में वैचारिक तनाव निर्माण होने का प्रमुख कारण क्या है ?
3. क्या नारी सच ही में पुरूषों की अपेक्षा दुर्बल है ?
4. नारी के सामने उपस्थित समस्याओं में मूल समस्या कौन-सी है, जिसके कारण नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है ?
5. आज शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करने के उपरांत भी नारी की स्थिति में परिवर्तन क्यों नहीं आया?
6. क्या नारी अपनी मर्जी से वेश्यावृत्ति स्वीकारती है ?
7. वह कौन-सा महत्त्वपूर्ण कारण है जिसके प्रभाव से नारी को वेश्यावृत्ति करनी पड़ती है?
8. दिन-ब-दिन वेश्याओं की संख्या में वृद्धि होने का कारण क्या है?

9. व्यक्ति, संस्था व शासन द्वारा प्रयास करने के बाद भी वेश्यावृत्ति बंद करने में सफलता क्यों नहीं मिली ?

10. क्या समाज को वेश्यावृत्ति की जरूरत है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु व विषय-विवेचन में सुसंगतता लाने हेतु आलोच्य विषय को चार अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय - ``आलोच्य कहानियों में चित्रित नारी जीवन।`` के अंतर्गत नारी जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण किया है। संभवत: गृहिणी नारी, नौकरी पेशा नारी, परित्यक्ता नारी, विधवा नारी, कुँआरी माता, प्रेम में असफल नारी जीवन का विवेचन प्रस्तुत कर अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

``आलोच्य कहानियों में चित्रित नारी की समस्याएँ।`` इस द्वितीय अध्याय के अंतर्गत समस्या शब्द का अर्थ एवं परिभाषाओं को देकर, वैधव्य की समस्या, कुँआरा मातृत्व, परित्यक्त, व्यसनाधीन पति, अकेलापन, आर्थिक समस्य आदि समस्याओं का विवेचन किया है, जो कहानियों में चित्रित हुई हैं। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

``आलोच्य कहानियों में चित्रित वेश्या जीवन।`` इस तृतीय अध्याय के अंतर्गत `वेश्या` शब्द का अर्थ और विभिन्न विद्वानों द्वारा दी हुई परिभाषाओं के साथ वेश्या नारी का जीवन प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक बदलते संदर्भ में, वेश्या बनने के कारण, उनके सामने उपस्थित होनेवाली समस्याएँ, वेश्याओं के प्रकार और वेश्या निमूर्लन उपायों और कठिनाइयों की चर्चा कर अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

``आलोच्य कहानियों में चित्रित नारी का मनोविज्ञान।`` चतुर्थ अध्याय है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मनोविज्ञान का अर्थ, मनोविज्ञान की विभिन्न परिभाषाएँ, मनोविज्ञान का स्वरुप, मनोविज्ञान की विविध शाखाओं का विश्लेषण कर कहानियों में चित्रित बालिका, युवती, गृहिणी, विधवा, परित्यक्ता, कुँआरी माता आदि का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत कर अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

उपसंहार :-

उपसंहार के अंतर्गत चार अध्यायों का सार संक्षेप में देने के साथ ही नई उपलब्धि के रूप

में मेरे सामने उपस्थित हुए ऊपर निर्दिष्ट प्रश्नों के उत्तर दिए हैं। साथ ही उन सुझावों को दिया है जिनके द्वारा वेश्या निर्मूलन करना संभव हो सकता है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोधकार्य के संकल्प की पूर्ति श्रद्धेय गुरूवर डॉ. र. ग. देसाई, अध्यक्ष हिंदी विभाग, श्री. म. ग. कन्या महाविद्यालय, सांगली के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. पी. एस्. पाटील जी, आदरणीय गुरूवर डॉ. वसंत मोरे जी व डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, डॉ. संजय नवले जी का भी मैं ऋणी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मार्गदर्शन कर इस कार्य को पूरा करने में मेरी मदद की है।

मेरे जीवन का कोई भी कार्य माता-पिता के बिना संपन्न नहीं हुआ है। इन्हीं के आशीर्वाद का फल है कि मैं अपने कार्य की पूर्ति में सफल हुआ हूँ। माता-पिता का कर्तव्य होता है कि संतान को अच्छी-से-अच्छी तालिम देकर अपने पैरों पर खड़ा रहने के काबिल बनाएँ। मेरे पिताजी सुभेदार नामदेव साळवे व माता द्वारका साळवे ने अनेक समस्याओं का सामना करते हुए अपने कर्तव्य को पूरा करने का सफल प्रयास किया है। आज मैं जो कुछ भी हूँ, उन्हीं की बदौलत हूँ। अत: इनका आभार मानकर मैं इनके ऋण से मुक्त नहीं होना चाहता क्योंकि ऋण तो गैरों का चुकाया जाता है, अपनों का नहीं।

मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरे गौत्म साळवे, देवेंद्र साळवे जैसे बड़े भाई हैं जिन्होंने हर समय अपनी कठिनाइयों की ओर ध्यान न देकर मेरी हर कठिनाइयों का सफलतापूर्वक समाधान किया साथ ही प्रस्तुत लघु-शोध कार्य पूरा करने के लिए प्रेरणा तथा आर्थिक मदत की। मेरा छोटा भाई अशोक साळवे ने भी मुझसे छोटा होते हुए भी इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में मुझे आर्थिक सहाय्य किया है। इसी प्रकार मेरी मौसी मंदोदरी चव्हाण, भौजाई लक्ष्मी साळवे, बहन लक्ष्मी चव्हाण, भांजा विजानंद खंकाळ, भांजी रेशमा, सुषमा, करिश्मा, भतिजा संघर्ष आदि सभी का मैं ऋणी हूँ जिन्होंने मेरे कार्य में अंश मात्रा में ही सही मेरी मदद की है।

आज के भौतिक युग में सच्चा मित्र मिलना मुश्किल ही नहीं अपितु नामुमकिन है। परंतु इस मामले में मैं बहुत ही सौभाग्यशाली हूँ। मुझे अशोक बाचूळकर, गिरीष काशिद, भारत कुचेकर, हनुमंत शेवाळे, कु. सुनीता वाघ जैसे सच्चे मित्र मिले और जिन्होंने इस लघु-शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरी मदद की, अत: इनके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मैं विशेष रूप से इसगुडे परिवार के प्रति अभार प्रकट करता हूँ जिनके दूरभाष यंत्र का प्रयोग कर समय-समय पर मैंने मार्गदर्शक से संपर्क स्थापित किया है।

इस लघु-शोध प्रबंध को संपन्न करने में निम्नलिखित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है -

1. शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.
2. श्री. म. ग. कन्या महाविद्यालय, सांगली.
3. महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर.

इन ग्रंथालयों के प्रमुख एवं कर्मचारियों का मैं हृदय से आभारी हूँ। मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोध कार्य में किया है।

इस लघु शोध-प्रबंध का टंकलेखन कोल्हापुर के श्री. मिलिंद भोसले जी ने उत्तम और बड़ी तत्परता से किया इसीलिए मैं उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। अंत में उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने जाने-अनजाने में ही सही इस लघु शोध-प्रबंध कार्य में मेरी मदद की है। उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर विनम्रता से विद्वानों के सामने मैं अपने लघु शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर - शोध-छात्र

तिथि - (मिलिंद साळवे)